گھی میں کافی ملاوٹ ہو رہی ہے - تو یہ جو شکایت ہے اس کو روکنے کے لئے سرکار کیا کر رہی ہے ؟

†[**श्री प्यारे लाल कुरील "तालिब"** : हिन्दुस्तान में बनास्पति घी काफी इस्तेमाल होता है और देखने में आम तौर पर यह आता है कि आज कल वनास्पति घी में काफी मिलावट हो रही है । तो यह जो शिकायत है इसको रोकने के लिए सरकार क्या कर रही है ?]

SHRI C. SUBRAMANIAM : It is a different question altogether.

MR. CHAIRMAN : It does not arise out of this.

*66. [*Postponed to the 8th March*, 1965.]

दिल्ली परिवहन की बसों में अत्यधिक भीड़

*67. **श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया** : क्या **परिवहन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्षेत्रीय यातायात अधिकारी ने दिल्ली परिवहन की बसों में अत्यधिक भीड़ के बारे में क्या कार्यवाही की है; और

(ख) 1963-64 के वर्ष में 31 दिसम्बर तक अत्यधिक भीड़ के कितने मामलों में चालान किया गया तथा उन्हें न्यायालय में प्रस्तुत किया गया ?

†[ ] Hindi transliteration.

†[OVER-CROWDING IN D.T.U. BUSES

*67. SHRI V. M. CHORDIA : Will the Minister of TRANSPORT be pleased to state :

(a) the steps taken by the Regional Transport Officer in connection with too much over-crowding in the D.T.U. buses; and

(b) the number of cases of over-crowding challaned and produced in courts during the year 1963-64 up to the 31st December ?]

परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर) : (क) और (ख) इस संबन्ध में एक विवरण मेज पटल पर प्रस्तुत है ।

विवरण

(क) बसों में अत्यधिक भीड़ को कम करने की दृष्टि से अधिक परिवहन सुविधा की व्यवस्था के लिये दिल्ली परिवहन संस्थान निम्न उपायों को काम में ला रही है । परिवहन अधिकारियों ने इस बारे में कोई कार्यवाही नहीं की है ।

(1) अपनी बसों के बेड़े को धीरे-धीरे बढ़ाना । संस्थान का अपने बेड़े में नई बसें लेने का वार्षिक क्रमिक कार्यक्रम है ।

(2) गाड़ियों का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए अपने मौजूदा गाड़ियों के बेड़े के ठीक रख-रखाव का सुनिश्चयन करना ।

(3) किसी विशेष समय में किसी खास मार्ग पर परिवहन सुविधाओं की अधिक आवश्यकता की पूर्ति के लिय विभिन्न मार्गों पर चलने वाली बसों की दिन प्रतिदिन एसी व्यवस्था करना जिससे जनता को कम से कम असुविधा हो ।

†[ ] English translation.

(4) यातायात आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए अस्थायी तौर पर प्राइवेट बसों को किराये पर लेना ।

(ख) इस समय मे अत्यधिक भीड़ का कोई मामला चालान नही किया गया ।

†[THE MINISTER OF TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR) : (a) and (b) A statement giving the information required is laid on the Table of the Sabha.

STATEMENT

(a) The following measures are being taken by the Delhi Transport Undertaking to provide increased transport facilities with a view to reducing over-crowding in the buses. No steps have been taken in this regard by the Transport Authority.

(i) Gradual augmentation of its fleet of buses. The Undertaking has a phased programme for addition of new buses to its fleet annually.

(ii) Ensuring proper maintenance of its existing fleet of vehicles with a view to maximise vehicle utilisation.

(iii) Meeting heavy requirements for transport facilities on particular routes at a given point of time by day-to-day adjustment of buses operated on different routes so as to minimise inconvenience to the public

(iv) Hiring of private buses temporarily to cope with traffic requirements.

(b) No case of over-crowding has been challaned during this period]

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान को यह पता है कि दिनांक 7 फरवरी 1965 के "दिनमान" नाम के साप्ताहिक में "आधुनिक जीवन" नाम के शीर्षक से आपकी डी० टी० यू० की प्रतिष्ठा का प्रमाणपत्र दिया गया और उसमें इस सम्बन्ध में चित्र भी दिए गए है कि लोगों को कितना कष्ट वगैरह उठाना पड़ता है, तो वह श्रीमान की निगाह में आया अथवा नहीं ? और उसके आने के पश्चात भी, इन सारे प्रयत्नों के बावजूद भी जनता को कष्ट है तो उसको दूर करने के लिए इन सुझावो के अलावा और कुछ करने को है अथवा नही ?

श्री राज बहादुर : "दिनमान" का जो सम्बन्धित लेख माननीय सदस्य ने बताया यह तो मुझे दृष्टिगोचर नही हुआ, उसे मै नही पढ पाया हूं, खेद है इस बात का, किन्तु जो कदम हमने मुश्किल को दूर करने के लिए उठाये है वह विदित है और उसका कुछ ब्यौरा मैने दिया है ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : श्रीमान ने यह कहा है "अपने बसों के बेडे को धीरे-धीरे बढाना", तो आप अपनी बसों को धीरे-धीरे बढ़ा रहे है और जनसंख्या का बेड़ा भी धीरे-धीरे बढता जा रहा है । जनसंख्या के बेड़े की प्रगति होती जा रही है और आपका बेड़ा डिटीरियोरेट होता जा रहा है । तो ऐसी स्थिति में उसको काउंटर-एक्ट करते हुए आपका बेड़ा हो सके इस दिशा मे कुछ कर रहे है अथा नही ? पहली बात । दूसरी बात यह है कि ये आपकी बसेज़ स्थिति को सम्हालने में पर्याप्त नही है तो क्या कोई नई योजना अडरग्राउड बस-रूट्स की, अडरग्राउड ट्रेस वगैरह की सोच रहे है ?

श्री राज बहादुर : गवर्नमेंट के और कार्पोरेशन के काबू मे यह तो है कि बसों का बेडा बढाया जाय, बसो की हालत सुधारी जाय लेकिन कम से कम मेरे काबू मे यह नही है कि जो जनसंख्या का बेडा है उसको बढ़ने से रोक सकू; कम से कम मै उसमे कुछ नही कर सकता ।

†[ ] *English translation.*

श्री ए० बी० वाजपेयी : वक्तव्य मे कहा गया है कि प्राइवेट बसे भी चलाई जाती है । क्या मत्री महोदय इसकी सख्या दे सकेगे कि कितनी प्राइवेट बसे चलाई जाती है और डी० टी० यू० की कितनी बसे कारखाने मे बेकार पडी रहती है ? क्या इसका भी कोई हिसाब लगाया गया है ?

श्री राज बहादुर . जो प्राइवेट बसेज है उनकी सख्या 40 है और प्रत्येक मे 60 आदमियो के बैठने की गजाइश है और जो बसेज आम तौर से सिक-लिस्ट पर रहती है उनकी सख्या के बारे मे ऐसा है कि 914 बसेज आजकल डी० टी० यू० मे है और इनमे से 706 बसेज रोजमर्रा काम के लिए, शेड्यूल्ड आपरेशस के वास्ते काम मे लाई जाती है, शेष या तो कुछ टूट-फूट मे रहती है, मरम्मत मे रहती है, ओवरहाल मे रहती है और आपका मालूम ही है कि इनमे से 100 बसेज ऐसी है जो कि सैकेड हैड है और यह अदाजा लगाया जा सकता है कि उनमे सब की सब काम मे नही आ सकती और धीरे-धीरे रिप्लेस करने की कोशिश की जा रही है ।

SHRI G M MIR Sir the D T U is not in a position to meet the requirements of Delhi's population and I have heard people refer to D T U as 'Don't Trust Us" So I would ask the hon Minister what action has been taken with regard to this Why should not the private owners of buses be asked to take up this job ?

श्री राज बहादुर यह सवाल ना पैदा ही नही होता । जितना भी मुमकिन है स्टेट गवर्नमेंट के लिए पैसा लगाना, जितना वह लगा सकती है

SHRI G M MIR I asked the question in English

SHRI RAJ BAHADUR I am sorry

MR CHAIRMAN It is being translated There is simultaneous translation

SHRI RAJ BAHADUR I think the question of giving it to the private sector does not arise at all We are trying to mobilise all the possible resources and we have also increased the Third Plan allocation from Rs 320 lakhs to Rs 418 lakhs which is a rise of Rs 98 lakhs on the total allocation And as for the second part of the question I may say we have already augmented the number

SHRI I K GUJRAL In view of the inadequate transport facilities available in the city some two years ago a special committee was set up under the chairmanship of the Chief Commissioner, to recommend alternate means of communication May I ask the hon Minister if the report of that committee has been lying on his desk for these two years or has any action been initiated on the basis of the recommendation made by that committee on which some foreign experts also were there ?

SHRI RAJ BAHADUR Which report ?

SHRI I K GUJRAL Some two years ago the Chief Commissioner of that time was asked to set up a special committee, by your Ministry and with that committee some foreign experts were also associated and it was to recommend alternate means of communication in the city The report has been there for two years May I request the hon Minister to tell us if that report has been read and also if any action has been initiated ?

SHRI RAJ BAHADUR So far as I am aware, I never allow any report to lie on my desk and I make sure that every paper on my desk is cleared by the evening If there has been any such report, it must have been taken into account and this augmenting of the allocation for the fleet of buses is proof positive of that fact

SHRI B K P SINHA May I ask the hon Minister if the attention of Government has been drawn to this fact that

while there may be over-crowding at certain peak hours, at certain other hours while the passengers are waiting at the stand, the buses go very much un-crowded and they take very much less than their capacity ? I say this because at night I find that the light in the board which indicates the destination is defective, and sometimes there is no light. Even if there is, it is so dim that nobody can read the destination. And in the space meant for the destination board, for reasons of economy maybe, instead of covering the whole space, the boards cover only one-fourth of the space available. The result is that nobody can read the destination board and by the time you read it and try to stop the bus, the bus which is un-crowded rushes away leaving the people standing and waiting.

SHRI RAJ BAHADUR : I will certainly take this information and pass it on to the Corporation for such action as is required to eliminate these complaints.

MR. CHAIRMAN : Mr. Arjun Arora.

SHRI N. SRI RAMA REDDY : Sir, . . .

SHRI ARJUN ARORA : He has called Arjun Arora. You are not Arjun Arora.

MR. CHAIRMAN : Two of you cannot put questions together.

SHRI ARJUN ARORA : May I know if the Government has realised the fact that about 20 per cent of the buses remain idle every day ?

AN HON. MEMBER : No. 30 per cent.

SHRI ARJUN ARORA : Yes, maybe 30 per cent of them remain idle every day and that is a serious state of affairs. It appears that the workshops of the D.T.U. are very badly managed and are not efficient. Does the Government propose to do something about it ?

SHRI RAJ BAHADUR : The figure is not 30 per cent. Out of 914 buses as many as 706 are running every day on an average. So it may be about 20 per cent.

MR. CHAIRMAN : Maybe a little arithmetical inaccuracy.

SHRI RAJ BAHADUR : They are taking every possible step to improve the maintenance. As I said, out of 914 buses, about 100 are old second hand buses put into service to deal with a certain difficult situation. So they are trying to do whatever they can.

شری پیارے لال کریل

''طالب'' : مانیہ منتری جی سے میں یہ جاننا چاہوں گا کہ کیا یہ بات صحیح نہیں ہے کہ بسوں میں بھیڑ کی اصلی وجہ یہ ہے کہ بسیں ٹائم پر نہیں چلتی ہیں - ہر بس اسٹاپ پر لوگ جمع ہوتے جاتے ہیں اور بسوں کا جو ٹائم ہے اس سے ایک ایک گھنٹے تک لیٹ چلتی ہیں - اس کی وجہ سے آرٹیفیشیل طریقہ پر بھیڑ پیدا کی جاتی ہے - کیا مانیہ منتری جی یہ کرینگے کہ بسیں جو بے قاعدگی سے چلتی ہیں وہ قاعدگی سے چلیں اور ٹائم پر چلیں ؟

†[श्री प्यारे लाल कुरील "तालिब" : माननीय मंत्री जी से मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या यह बात सही नहीं है कि बसों में भीड़ की असली वजह यह है कि बसें टाइम पर नहीं चलती हैं, हर बस स्टाप

†[ ] Hindi transliteration.

पर लोग जमा होते जाते है और बसों का जो टाइम है इससे एक-एक घटे तक लेट चलती है । इसकी वजह से आर्टिफिशियल तरीके पर भीड पैदा की जाती है । क्या माननीय मत्री जी यह करेगे कि बसे जो बेकायदगी से चलती है वह कायदगी से चले और टाइम पर चले ?]

श्री राज बहादुर हो सकता है कि कोई-कोई बस पकचुअली न चलती हो ; यह शिकायत हो सकती है लेकिन मै यह बताना चाहूगा हू कि बसेज की, डी० टी० यू० की, जो व्यवस्था है वह पूर्णतया कार्पोरेशन के अधीन है और कार्पोरेशन पूर्णत. चुनी हुई है, जो वहा के मेम्बर साहबान चुने हुए है वे इसकी देख-रेख पर हमेशा ध्यान देते रहते है ।

سری عبدالغنی : کیا وزیر صاحب فرمائیں گے کہ ان کے نوٹس میں ایسی شکایتیں آئی ہیں کہ جتنی ٹرپ ہوتی ہیں ان میں سے کچھ ٹرپ خود بخود کینسل کر دی جاتی ہیں اور اس کی وجہ سے لوگوں کو زیادہ دقت آتی ہے ۔ جس روٹ پر جتنی ٹرپیں مقرر ہیں جتنی ٹرپس بسوں کو لگانی ہیں ان ٹرپوں میں سے کچھ ٹرپس وہاں کے کرم-چاری ویسے ہی کینسل کر دیتے ہیں اور اس کی وجہ سے جنتا کو زیادہ تکلیف ہوتی ہے ۔ ایسی کوئی شکایت آپ کے نوٹس میں آئی ہے ؟

†[**श्री अब्दुल ग़नी** : क्या वजीर साहब फरमाएगे कि उन के नोटिस मे ऐसी शिकायतें आई है कि जितनी ट्रिप होती है इनमे से कुछ ट्रिप खुद बखुद केसिल कर दी जाती है और इसकी वजह से लोगो को ज्यादा दिक्कत आती है । जिस रूट पर जितनी ट्रिपे मुकर्रर है जितनी ट्रिपे बसो को लगानी है इन ट्रिपों मे से कुछ ट्रिपे वहा के कर्मचारी वैसे ही केसिल कर देते है और इसकी वजह से जनता को ज्यादा तकलीफ होती है । ऐसी कोई शिकायत आपके नोटिस मे आई है ?]

श्री राज बहादुर : कभी कभी ऐसा होता हो तो कोई ताज्जुब नही । यह ज़रूर होता है कि पीक-आवर्स का जो ट्रैफिक है, उसकी वजह से वह ज्यादा से ज्यादा बसे देते है, 70-80 बसे पीक आवर्स मे लगाते है ।

*68 [*The questioner (Shri Sitaram Jaipuria) was absent. For answer,* vide *cols.* 435-536 *infra*]

GRANTS FROM CENTRAL SOCIAL WELFARE BOARD

'69 SHRI P K. KUMARAN Will the Minister of SOCIAL SECURITY be pleased to state

(a) the number of institutions to which assistance has been granted by the Central Social Welfare Board during the years 1962, 1963 and 1964, and

(b) how many such institutions are now defunct and how many were actually not started and what were the reasons therefor ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LAW (SHRI JAGANATH RAO) (a) A statement is laid on the Table of the Sabha.

(b) The requisite information is being collected and will be placed in the Sabha when available.

†[ ] Hindi transliteration.